अध्याय-प्रथम

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना

1.2 समस्या कथन

1.3 समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा एवं व्याख्या

1.4 शोध के उद्देश्य

1.5 शोध का परिसीमन

1.6 शोध परिकल्पनाएँ

1.7 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

अध्याय प्रथम

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना :

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है। जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, भावनात्मक विकास के साथ व्यावसायिक विकास का भी अंतर्भाव होता है। व्यवसाय के लिये भिन्न योग्यताओं एवं क्षमताओं वाले व्यक्तियों की आवश्यकता होती है जो कि विभिन्न व्यवसायों को अपना सके। इसके लिये विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा जानना अत्यंत आवश्यक है जिसे जानकर उन्हें विशेष व्यावसाय की प्राप्ती की दिशा में निर्देशन एवं सहयोग दे सकते हैं।

भारत वर्तमान स्थिति में जनसंख्या विस्फोट, बेरोजगारी जैसी जटिल समस्याओं का सामना कर रहा है। शिक्षा संस्थानों को यह जिम्मेदारी दी गई है कि, वह विद्यार्थियों में व्यावसायिक व्यवहार को विकसित करे जिससे कि इन समस्याओं का हल किया जा सके। प्रचलित शिक्षा तंत्र को समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहिये।

शिक्षा को समाज में एक संस्था इसलिये बनाया गया है, ताकि व्यवहार के विकास को बढ़ा सके। समाज में कई संस्थाओं के शैक्षिक कार्य हैं। पर शिक्षण संस्था समाज के साधन के रूप में ज्ञान का उपयोग करके इसके सदस्यों के विकास को आगे बढ़ाती है।

आधुनिक शिक्षा व्यक्ति की योग्यता पर निर्भर करती है। शिक्षा समाज के सदस्यों में सुधार लाने का साधन है। यह सुधार शिक्षक द्वारा लाया जाता है। शिक्षक उचित वातावरण निर्माण के द्वारा व्यक्ति एवं समाज

की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा प्रक्रिया की व्यवस्था करने के लिये जिम्मेदार होता है। शिक्षक की यह जिम्मेदारी होती है, कि वह व्यक्ति की योग्यताओं को प्राप्त करने योग्य बनाये जिससे वह समाज का उपयोगी सदस्य बन सके। समाज का उपयोगी सदस्य बनने का एक तरीका आत्मानुभूति है। आत्मानुभूति के लिये कार्य करना आवश्यक है, जो किसी उपयुक्त व्यवसाय के चयन द्वारा होता है। सही व्यवसाय चयन व्यक्ति एवं समाज दोनों को संतोष प्रदान करता है।

व्यक्ति के जीवन में व्यवसाय का मनोवैज्ञानिक महत्व है। जब विद्यार्थी शिक्षण संस्थानों को छोड़कर बाहरी दुनिया में प्रवेश करता है तो उसे व्यावसाय संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। विद्यार्थियों के व्यावसायिक चयन पर शैक्षिक, सामाजिक, वैयक्तिक, कारकों का प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक समाज में शैक्षिक तंत्र सभी विद्यार्थियों के शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। ऐसे मंत्र को बनाने व कार्यान्वित करने से पहले विद्यार्थियों की आवश्कयता को सतर्कता से मापना चाहिये।

मानव प्रतिभा देश का महत्वपूर्ण संसाधन है। इसका संरक्षण एवं विकास प्रत्येक के लिये प्राथमिक कार्य होना चाहिये। जब मानव प्रतिभा व्यर्थ जाती है, तो प्रत्येक व्यक्ति उससे वंचित होता है और जब यह सही प्रकार से विकसित होती है तो प्रत्येक को लाभ होता है।

व्यावसायिक चयन, व्यावसायिक विकास का एक पक्ष है। व्यावसायिक चयन एक प्रक्रिया है, न कि एक घटना। विद्यार्थी के व्यावसायिक विकास के अनेक कारक हैं, जिसमें से दो प्रमुख कारक हैं, वास्तविक एवं प्रत्यक्षीकृत। वास्तविक कारक साधारणतः भौतिक संसाधनों से संबंधित है, जबकि प्रत्यक्षीकृत (Percepteral) कारक सामान्यतः व्यक्ति के सकारात्मक एवं नकारात्मक वातावरण से संबंधित है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में 'व्यावसायिक चयन' अब नितान्त जटिल एवं चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया बन गई है। इसके कई कारण हैं। हमारी विकास योजनाओं की क्रियान्वयन नीतियों में बुनियादी तौर पर कमजोरी होने के साथ हमारी शिक्षा व्यवस्थाओं के कलेवर एवं उनसे जुड़े परिपेक्ष्य द्वारा भारतीय संस्कृति की पहचान बनाये रखने वाले मूल्यों पर आधारित व्यावसायोन्मुख दृष्टि एवं अपेक्षित कुशलता का नहीं विकसित हो पाना कतिपय सुविदित समस्याऐं है जिनकी ओर राष्ट्रीय स्तर की शीर्ष संस्थाओं का ध्यान भी केन्द्रित हो रहा है।

व्यवसायों का चुनाव कई तत्वों पर निर्भर होता है। यहां स्मरण रखना होगा कि जैसे-जैसे सामाजिक व्यवस्था बदलती गई तथा उसकी संरचना में जटिलता आती गई, गतिशील समाज की संरचना में व्यक्ति में व्यक्ति द्वारा अपने व्यावसायों के चुनने की प्रक्रिया में भी तब्दीली होती गई। भारतीय समाज में यह विशेषता रही है कि पिता के व्यवसाय के आधार पर पुत्र अपने व्यवसाय का चुनाव प्रायः करता रहा है। किन्तु विगत 50 वर्षो में इस दृष्टि से भारी सामाजिक परिवर्तन दिखाई पड़ता है। अब पूरे सामाजिक एवं व्यावसायिक पर्यावरण का जादूई प्रभाव व्यक्ति की आकांक्षा एवं उसके प्रेरणास्त्रोतों को तुरंत बदल देता है।

वर्तमान स्थिति में विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूची जानकार उसके अनुसार उन्हें शिक्षा प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है। देश का विकास उसकी आर्थिक सम्पन्नता पर निर्भर होता है और देश को आर्थिक शक्ति बनाने के लिये यह धरोहर जिनके हाथों में है उन्हें परिपूर्ण शिक्षा देकर राष्ट्र की उन्नति करवा सकते हैं। जापान जो कि द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात अपना अस्तित्व खो चुका था। उसनें सही प्रविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा का उत्कृष्ट संयोजन कर आज अपनी छाप दुनिया भर में छोड़ी है।

द्वितीय विश्वयुद्ध ने जर्मनी तथा जापान को जर्जर बनाकर उनकी अर्थव्यवस्था को तहस-नहस कर दिया था, पर उन्होनें प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा के विकास हेतु जो कदम उठाए उसी के कारण आज इन देशों की स्थिति सुदृढ़ तथा सम्मानजनक बनी है। आज हमारे देश को ऐसे ही प्रयास की आवश्यकता है कि व्यावसायिक शिक्षा को आगे बढ़ाने हेतु संपूर्ण प्रयास किये जाये केवल कागजी कार्यवाही से काम नहीं चलेगा बल्कि इसको हमें कार्यान्वित करना होगा।

अतः जीवन में व्यवसाय चयन का महत्वपूर्ण स्थान है। विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूची जानकर उन्हें रूची अनुसार शिक्षा सुविधा देना कि वर्तमान की जरूरत है।

1.2 समस्या कथन –

"उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन।"

1.3 समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा एवं व्याख्या –

1. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राऐं –

प्रस्तुत अध्याय में उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं से आशय है जो विद्यार्थी अपनी 8 कक्षा तक की बुनियादी शिक्षा पूर्ण कर चुके हैं और अपनी भविष्य के प्रति सजग हैं। आनेवाली चुनौतियों का सामना करने के लिये सक्षमता की ओर अपने कदम बढ़ा रहे हैं।

2. शैक्षिक उपलब्धि –

शैक्षिक उपलब्धि से आशय प्राप्त ज्ञान या शालेय विषयों में विकसित प्रवीणता या कुशलता से है जो सामान्यतः परीक्षणों में प्राप्त अंकों द्वारा, या शिक्षक द्वारा दिये गये अंकों द्वारा निश्चित की जाती है तथा शैक्षिक उपलब्धि के मापन का मुख्य उद्देश्य यह है कि छात्र ने अंश तक विद्यालय

द्वारा निश्चित किये गये उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया है, कि जानकारी देना है।

3. व्यावसायिक रूचि –

व्यावसाय का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। व्यवसाय मानव को जीवन यापन का साद्य ही नहीं प्रदान करता अपितु उचित व्यवसाय में स्थान मिलने पर मानव को आत्म–संतुष्टि प्राप्त होती है। आत्मबल मनोविज्ञान तथा आत्मनिर्भरता की दृष्टि से व्यावसायिक रूचि उसकी स्वयं को या किसी अन्य स्त्रोत के माध्यम से व्यक्त किया गया सकारात्मक दृष्टिकोण है।

व्यावसायिक रूचि का तात्पर्य व्यक्ति की किसी विशेष प्रकार के व्यवसाय के प्रति अभिज्ञासा से है।

1.4 शोध के उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य निम्नलिखित थे –

1. उच्च–माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का अनुमापन करना।
2. उच्च–माध्यमिक स्तर के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अनुमापन करना।
3. उच्च–माध्यमिक स्तर के छात्रों की व्यवसायिक रूचि का अनुमापन करना।
4. उच्च–माध्यमिक स्तर के छात्राओं की व्यावसायिक रूचि का अनुमापन करना।
5. उच्च–माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में तुलना करना।
6. उच्च–माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की व्यवसायिक रूचि की तुलना करना।

1.5 शोध का परिसीमन –

- ❖ प्रस्तुत शोध महाराष्ट्र राज्य के अमरावती शहर तक सीमित था।
- ❖ प्रस्तुत शोध अमरावती शहर के शासकीय विद्यालयों तक सीमित था।
- ❖ यह शोध उच्च–माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित था।

1.6 शोध परिकल्पनाएँ –

प्रस्तुत शोध में निम्नवत् परिकल्पनाओं का निर्माण तथा परिक्षण किया गया था।

1. उच्च–माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यावसायिक रूचि के मध्य सह–संबंध नहीं होगा।
2. उच्च–माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. उच्च–माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक रूचि के मध्य सार्थक अंतर नहीं होगा।

1.7 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व –

विद्यार्थियों को विभिन्न रूचियों में व्यावसायिक रूची अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। उचित व्यावसायिक रूचि व्यक्ति के जीवन को संवार सकती है। जबकि आधारहीन व्यावसायिक रूचि व्यक्ति के उन्नति में बाधा बन सकती है। व्यावसायिक रूचियों के निर्माण और उनके चयन में शिक्षा व्यवस्था का प्रमुख उत्तरदायित्व होता है। इन रूचियों के निर्माण में वातावरण भी अपनी भूमिका निभाता है। यदि व्यक्ति की व्यावसायिक रूचियों का सही रूप में आंकलन किया जाए तो उसी के अनुरूप शिक्षा आयोजन किया जा सकता है। आवश्यकता होने पर शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन भी किया जा सकता है। विद्यार्थियों को उनकी रूचियों के आधार

पर भविष्य में व्यवसाय के लिये उचित परामर्श दिया जा सकता है। व्यक्ति को व्यावसायिक मार्ग दर्शन के माध्यम से उनकी क्षमता के अनुसार कार्य करने के लिये प्रेरित किया जा सकता है।

उच्च-माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की व्यावसायिक रूचियाँ जानना अत्यंत आवश्यक है इससे विद्यार्थी अपने भविष्य के प्रति कितने जागरूक हैं? उन्हें भविष्य में आने वाले व्यावसायिक अवसरों की कितनी जानकारी है एवं उनकी व्यावसायिक रूचियां कौन सी हैं? यह जानकर उन्हें उचित शिक्षा प्रदान कर सकते हैं।

वर्तमान परिपेक्ष्य में भारत के संपूर्ण सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिये व्यावसायिक शिक्षा, शिक्षा का एक आवश्यक अंग है। जिसके द्वारा हम विश्व के आर्थिक क्षेत्र में तथा विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्र में अपना प्रथम स्थान प्राप्त कर सकते हैं। इसके साथ यह जानना भी आवश्यक है कि छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियां क्या हैं? क्या उसकी व्यावसायिक रूचियों में कोई अंतर होता है? शैक्षिक उपलब्धियों के साथ व्यावसायिक रूचि में अंतर आता है।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए एक ऐसे शोध कार्य की आवश्यकता हुई जिसमें छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धी तथा व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए।